ईश्वर के वचन के अनुसार चढ़ाया गया बलिदान उस व्यक्ति के लिए गहन आत्मिक शक्ति रखता है जो उसे अर्पित करता है। जहाँ कुछ बातें केवल प्रार्थना से हल हो सकती हैं, वहीं कुछ के लिए प्रार्थना और बलिदान—दोनों की संयुक्त शक्ति की आवश्यकता होती है।

आइए इस सत्य को गहराई से समझने के लिए बाइबल के घटनाक्रम पर ध्यान दें।

जब भविष्यद्वक्ता शमूएल को शाऊल के स्थान पर दाऊद का अभिषेक करने के लिए बुलाया गया, तो शास्त्र बताते हैं कि इस कार्य को लेकर उसके मन में गहरी भय था।

शमूएल क्यों डर रहा था?
क्योंकि राजा शाऊल ईर्ष्यालु था और सिंहासन खोने से भयभीत था। किसी अन्य राजा का अभिषेक होना इस बात का संकेत था कि ईश्वर ने शाऊल को अस्वीकार कर दिया है, जो उसके जीवन के लिए खतरा था। ईर्ष्या और क्रोध घातक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कर सकते हैं; इसलिए शमूएल को डर था कि शाऊल उसे और परमेश्वर द्वारा चुने गए दाऊद को मार डालेगा।

लेकिन परमेश्वर की सार्वभौमिक योजना यह थी कि दाऊद का अभिषेक बिना किसी रक्तपात के और उसके सेवकों को हानि पहुँचाए बिना हो। यह कैसे संभव हुआ?
एक बलिदान के माध्यम से।

आइए 1 शमूएल 16:1–3 (ESV) को पढ़ें:

“The LORD said to Samuel, ‘How long will you mourn for Saul, since I have rejected him from being king over Israel? Fill
your horn with oil, and go. I will send you to Jesse the Bethlehemite, for I have provided for myself a king among his sons.’
But Samuel said, ‘How can I go? If Saul hears it, he will kill
me.’ And the LORD said, ‘Take a heifer with you and say, “I
have come to sacrifice to the LORD.”
And invite Jesse to the sacrifice, and I will show you what to
do. You shall anoint for me the one I name to you.’”

यहाँ हम देखते हैं कि बलिदान मात्र एक रीति-रिवाज नहीं था, बल्कि एक दिव्य रणनीति थी। बलिदान ने एक ढाल का कार्य किया—एक आत्मिक सुरक्षा—जिसने इस खतरनाक कार्य के दौरान शमूएल और दाऊद दोनों को संरक्षण दिया।

बलिदान का धर्मशास्त्रीय महत्व

पुराने नियम में बलिदान अक्सर एक गहरी आत्मिक सच्चाई की ओर संकेत करता था। यह पश्चात्ताप, निर्भरता और ईश्वर के साथ संगति का ठोस अभिव्यक्ति था। बलिदान मानव पापशीलता और प्रायश्चित्त की आवश्यकता को स्वीकार करते थे। वे उस जीवन का प्रतीक थे जो उपासना के रूप में परमेश्वर को अर्पित किया जाता है।

इस कहानी में, बलिदान मृत्यु और बुरी शक्तियों की ताकत के विरुद्ध एक हस्तक्षेप के रूप में भी कार्य करता है। मृत्यु की “रस्सियाँ” खुल गईं, जैसा कि भजन संहिता 18:4 (ESV) में लिखा है:

“The cords of death encompassed me; the torrents of destruction assailed me.”
(“मृत्यु के बंधनों ने मुझे घेर लिया; विनाश की धाराओं ने
मुझे भयभीत किया।”)

यह इस बाइबिलीय सत्य के अनुरूप है कि उपासना और आज्ञापालन के कार्य आध्यात्मिक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

बलिदान चढ़ाने की आत्मिक गतिशीलता

जब कोई विश्वासयोग्य व्यक्ति प्रभु को एक बलिदान या विशेष भेंट अर्पित करता है—प्रकाशन से प्रेरित होकर और परमेश्वर के प्रति समर्पित हृदय के साथ, न कि किसी मनुष्य के दबाव या संकट में—तो आत्मिक आशीषें बहती हैं। पाप और मृत्यु की जंजीरें टूट जाती हैं। परमेश्वर की कृपा और सुरक्षा प्रकट होती है।

यह आवश्यक है कि ऐसी भेंटें वहाँ लाई जाएँ जहाँ प्रभु की उपासना और आदर होता है—जैसे कलीसिया में या उन स्थानों पर जो परमेश्वर के कार्य के लिए समर्पित हैं (तुलना करें मलाकी 3:10, ESV: “Bring the full tithe into the storehouse…”), क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान ही अनुग्रह और आत्मिक अधिकार का स्थान होता है।

दूसरों को देना—मित्रों या गरीबों को—अच्छा और धन्य है। लेकिन प्रभु की भेंट उसी की होती है और उन्हें उसके वचन के अनुसार उसी को लाया जाना चाहिए।

इसलिए, गरीबों और ज़रूरतमंदों के प्रति अपनी उदारता के साथ-साथ, प्रभु के लिए एक विशेष अंश अलग रखें—उपासना के बलिदान के रूप में। यह दोहरी अभ्यास परमेश्वर की व्यवस्था को दर्शाता है और

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

उसकी प्रभुता का सम्मान करता है।

प्रभु आपको आशीष दे और आपको सामर्थ्य प्रदान करे जैसे आप अपना जीवन और अपनी भेंटें उसे भक्ति एवं आज्ञापालन के साथ अर्पित करते हैं!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp